VOL- X | ISSUE- II | FEBRUARY | 2023 | PEER REVIEW e-JOURNAL | IMPACT FACTOR 7.367 | ISSN 2349-638x

दलित जीवन की गाथा : 'धरती धन न अपना'

कविता चूर
शोधार्थी (पीएच.डी.)
हिन्दी विभाग,
जम्मू विश्वविद्यालय
जम्मू — १८०००६

सारांश :

स्वातंत्र्योत्तर काल के हिन्दी उपन्यासकारों में जगदीश चन्द्र अपना विशिष्ट स्थान रखते हैं। 'धरती धन न अपना' उनका प्रथम उपन्यास है जो १९७२ ई. में प्रकाशित हुआ। प्रस्तुत उपन्यास सदियों से जुल्म झेलते आ रहे ग्रामीण दलितों और भूमिहीन मजदूरों की समस्याओं को केन्द्र में रखकर लिखा गया है। यह उपन्यास भारतीय जाति व्यवस्था में हाशिए पर धकेल दिए गए बहिष्कृतों का जीवन व्यतीत करने वाले दलितों के जीवन की त्रासदी की मार्मिक अभिव्यक्ति है। लेखक ने समाज की मुख्यधारा से बहिष्कृत बस्ती चमादड़ी में रहने वाले चमार जाति के लोगों की पीड़ा को यथार्थ की भूमि पर उतारा है।

बीज शब्द *— दलित, चमादड़ी, अत्याचार, आर्थिक अभाव, सामाजिक विषमता, शोषक, शोषित आदि।*

'धरती धन न अपना' उपन्यास के केन्द्र में पंजाब के जिला होशियारपुर का घोडेवाहा गाँव और गाँव के बाहर चमादड़ी में रहने वाले लोगों का जीवन है। उपन्यास का प्रारम्भ काली के ६ वर्ष बाद कानपुर से अपने गाँव घोडेवाहा लौटने से होता है। गाँव में उसकी एकमात्र संबंधी चाची प्रतापी रहती है जिसने उसका पालन पोषण किया। उसके गाँव लौटने का एकमात्र कारण उसक चाची के प्रति उसका लगाव ही है। गाँव वाले काली की शिक्षा और अच्छी आर्थिक स्थिति को देखकर उसका आदर करते हैं। गाँव आते ही वह समझ जाता है कि गाँव की स्थिति में कोई भी तब्दीली नहीं हुई है। अभी भी गाँव में दलितों का शोषण पूर्ववत् चल रहा है। जीतु के प्रौढ़ शरीर को देखकर उसे महसूस हुआ कि बचपन के बाद जीतु पर यौवन और बुढ़ापा एक साथ ही आ गया है। "उनका जीवन न केवल आर्थिक अभावों से ग्रस्त है बल्कि शारीरिक और मानसिक रूप से भी प्रताड़ित है।"[१]

काली चमादड़ी के चमार माखे का बेटा है। वह नई चेतना और दलितों के उद्धार की आशा लेकर छः साल बाद गाँव लौटता है। गाँव में अभी भी जमीदारों द्वारा चमारों से बिना पैसे दिए काम करवाना, उन्हें मारना पीटना, उनका शोषण करना साधारण सी बाते हैं। और यदि कोई बिना पैसे के मजदूरी से मना करे तो उसकी पिटाई हो जाती है। इसके पीछे का एकमात्र कारण उनका निम्न जाति का होना है। इस अन्याय को लेखक ने स्पष्ट किया है — "चमादड़ी में ऐसी घटनाएँ (किसी चमार की पिटाई) कोई नई बात नहीं थी ऐसा अक्सर होता रहता था। जब किसी चौधरी की फसल चोरी से कट जाती या बरबाद हो जाती या चमार चौधरी के काम पर न जाता। फिर किसी चौधरी के अन्दर जमीन की मल्कियत का अहसास जोर पकड़ लेता तो वह अपनी साख बनाने और अपना चौधरापन मनवाने के लिए इस मुहल्लें में चला जाता।"[२] दलितों की इस दशा के पीछे उनकी आर्थिक पराधीनता और सामाजिक विषमता जिम्मेवार है।

लेखक ने इस कृति में दलितों के धर्म परिवर्तन को भी रेखांकित किया है। पादरी गाँव के दलितों को ईसाई बनने के बाद मिलने वाले फायदों का लालच देकर उनका धर्म परिवर्तन करता है। अपनी निम्न जाति के कारण चमादड़ी के लोग गाँव के कुएँ से पानी नहीं भर सकते और न ही मंदिरों में प्रवेश कर सकते हैं। दलित लोग अपने जातीय पद और शोषण से मुक्ति के लिए धर्म परिवर्तन करने के लिए तैयार हो जाते हैं। ईसाई बना नन्ददास काली से कहता है — "गाँव में चमार होना तो सबसे बड़ा पाप है। घोर लांछन है। दो कौड़ी का मालिक काश्तकार अपने चमार को छट्ठी का दूध पिला देता है। . .. मुझे चमार शब्द से ही नफरत है। मुझे कोई चमार कहे तो गुस्सा आ जाता है।"[३] धर्म परिवर्तन के पीछे पादरी का यह स्वार्थ है कि उसके धर्म के लोगों की संख्या में वृद्धि होगी और दलित शोषण से मुक्ति के लिए धर्म परिवर्तन करने के लिए मान जाते हैं।

दलित जातियों की स्त्रियों का गाँव के संपन्न वर्ग द्वारा यौन शोषण एक आम बात है। गाँव के जमींदारों द्वारा उनके घरों में मेहनत मजदूरी का काम करने वाली दलित स्त्रियों की विवशता का फायदा उठाकर उनका यौन शोषण किया जाता है। वह उनपर अपना अधिकार मानते हैं। लेखक ने उपन्यास में दलित स्त्रियों के यौन शोषण को बहुत गहराई के साथ उद्घाटित किया है। आर्थिक अभावों के कारण चमादड़ी की स्त्रियां चौधरियों के नाजायज बच्चों की माँ भी बनती हैं। बेबे हुकमा और प्रीतो इसका उदाहरण हैं। उपन्यास में हरनाम सिंह (चौधरी) का भतीजा हरदेव मंगु की सहायता से प्रीतो की बेटी लच्छो की इज्जत लूटता है। इज्जत लुटाने के बाद भी लच्छो को बासी रोटियों के अलावा हरदेव के घर से और कुछ नहीं मिलता। यौन शोषण का शिकार हुई लच्छो की मनोस्थिति का चित्रण लेखक ने किया है — "लच्छो चौंक गयी और आटा गूँधती हुई सोचने लगी कि माँ घर से आटा उधार माँगने गयी तो आटा ले आयी। अमरु देगचा बेचकर आटा और गुड़ दोनों ले आया लेकिन वह अपना सब कुछ लुटाकर भी खाली हाथ वापस आ गयी।"[४] लच्छो की तरह प्रीतो, पाशो जैसी अनेक चमादड़ी की औरतें चौधरियों के भोग का शिकार बनती हैं। प्रस्तुत उपन्यास में उभर आया वर्ग संघर्ष मार्क्सवाद से प्रभावित है। यहाँ उच्च वर्ग के चौधरी एवं निम्न वर्ग के चमारों के बीच वर्ग संघर्ष होता है। गाँव में भारी वर्षा के कारण नदी में बाढ़ आने पर बाढ़ से गाँव को बचाने के लिए गाँव वाले नदी के सामने वाले बाँध को तोड़ देते हैं। तभी वहाँ एक छेद हो जाता है जिसे पूरने के लिए चौधरी लोग मजदूरी की आशा देकर चमादड़ी के लोगों को काम पर लगा देते हैं परन्तु दो दिन तक उन्हें मजदूरी के पैसे नहीं दिए जाते जिससे उनमें विद्रोह की भावना धधक उठती है। तीसरे दिन वह काम छोड़कर इकट्ठे होकर बैठे तो चौधरी आकर बोलता है — "कोई दिहाड़ी नहीं मिलेगी। उठो काम करो वरना मार—मारकर एक—एक का सिर तरबूज के खप्पर जैसा बना दूँगा।"[५] परन्तु शहर से गाँव वापस आया काली शहरी मजदूर संगठनों और शोषितों के अधिकारों के प्रति सचेत है। वह चौधरियों के आगे घुटने नहीं टेकता और सिर ऊँचा करके जवाब देता है कि — "मैं बिना पैसों के काम नहीं करूंगा। मैं किसी के पास गिरवी नहीं पड़ा हूँ जो बेगार करूँ।"[६] जब वह पैसे नहीं देते तो वह काम छोड़कर चला जाता है और उसके पीछे बाकी लोग भी चले जाते हैं। और वे सभी संगठित होकर हड़ताल पर बैठ जाते हैं। दलितों के हड़ताल पर जाने से चौधरियों की फसलें खराब हो गई। हड़ताल के छठवें दिन चौधरियों ने शोषितों के सामने हार मान ली और हरनाम सिंह ने अपने वर्ग का निर्णय सुनाया कि — 'हर घर अपने अपने चमार को पैसे दे दे।"[७]

काली के गाँव लौट आने का मुख्य उद्देश्य शोषितों को अपने अधिकारों के प्रति सजग बनाकर अन्याय के खिलाफ लड़ने के लिए तैयार करना है। वह अपनी चमादड़ी में पक्का मकान बनवाकर शोषक वर्ग को चुनौती देना चाहता है। वह चमादड़ी के लोगों पर हो रहे अत्याचारों के बारे में दुकानदार छज्जू से कहता है — "मुझे तो समझ नहीं आता कि लोग मारने का हौंसला कैसे कर लेते हैं और कसूर न होते हुए लोग मार क्यों खा लेते हैं।"[८] चौधरी जब मंगु को कुत्ता चमार कहता है तो जातिगत शोषण और अत्याचारों के प्रति सचेत काली क्रोधित होकर उठ खड़ा हो जाता है। लेखक के शब्दों में — "काली गर्दन झुकाए हुए सोच रहा था कि चौधरी ने मंगु को कुत्ता चमार क्यों कहा। काली अपने क्रोध को दबाता हुआ उठ खड़ा हुआ।"[९]

घोडेवाहा में एकमात्र काली ही है जो अन्याय, अत्याचार और शोषण के खिलाफ आवाज उठाता है। ज्ञानों भी काली को हमेशा अन्याय के विरुद्ध लड़ने की प्रेरणा देती है। उपन्यास के अन्त में जब चौधरियों से तंग आकर काली गाँव छोड़ने की बात करता है तो ज्ञानों उसे क्रुद्ध स्वर में कहती है कि — "मैं तो समझती थी कि तूं जिगरवाला आदमी है तू आसानी से दबने वाला नहीं है। तेरे से गली के कुत्ते अच्छे हैं जो मारने पर आगे से घूरते हैं।"[१०]

क्योंकि लेखक ने दलितों पर हो रहे अत्याचारों को स्वयं देखा है इसलिए उनका समस्त कथा साहित्य भारतीय गाँव के उत्पीड़न, शोषण और गरीबी के बीच से गुजरते हुए जीवन का लेखा जोखा प्रस्तुत करता है। उपन्यास लिखने की मूल प्रेरणा के विषय में लेखक स्वीकार करते हैं कि — "मैं यह सब देखकर बहुत ही उद्विग्न होता था कि आर्थिक अभावों की चक्की में युग—युगान्तरों से पिस रहे हरिजन अब भी मध्यकालीन यातनाओं को भोग रहे हैं। जिस भूमि पर वे रहते हैं, जिस जमीन को वे जोतते हैं, यहाँ तक कि जिन छप्परों में वे रहते हैं कुछ भी उनका नहीं है। इन्हीं बातों को देखकर मेरे किशोर मन की वेदना सहसा अपने सभी बाँध तोड़कर फूट निकली और मैंने उपेक्षित हरिजनों के जीवन का चित्रण करने का संकल्प कर लिया।"[११]

निष्कर्षत: कहा जा सकता है कि उच्च वर्ग के दबाव और अत्याचारों से मुक्त होने के लिए दलितों का जागरण और नेतृत्व अत्यन्त आवश्यक है। जब तक मनुष्य को मनुष्य न मानने वाले सामन्ती संस्कारों का अंत नहीं होता तब तक मानव और मानवता की हत्या होती रहेगी।

सन्दर्भ

1. डॉ. जगदीश चन्द्र, धरती धन न अपना, राजकमल प्रकाशन,नई दिल्ली,सं. १९८१,पृ. १६
2. वही, पृ. २७
3. वही, पृ. १९०
4. वही, पृ. १०३
5. वही, पृ. २३३
6. वही, पृ. २३६
7. वही, पृ. २६०
8. वही, पृ. २१
9. वही, पृ. ५१
10. वही, पृ. २०९
11. वही, पृ. ७